

नवयुग का मत्स्यावतार: चेतना का तीव्र विस्तार

विचार-क्रान्ति का वैज्ञानिक आधार एवं जन-जन तक पहुँचने का संगठनात्मक ब्लूप्रिंट

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बानी का प्रकाश ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिग्रहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

बड़े प्रयोजन के लिए बड़े कदम: बहुमत का विज्ञान

[व्यक्तिगत
श्रेष्ठता]

(विस्तार /
नेटवर्क इफ़ेक्ट)

[सत्प्रवृत्तियों
का बहुमत]

[स्वर्गीय वातावरण
(सतयुग)]

[व्यक्तियों की
उद्दण्डता]

(विस्तार)

[दुष्प्रवृत्तियों
का बहुमत]

[विपत्तियाँ और
नरक (कलियुग)]



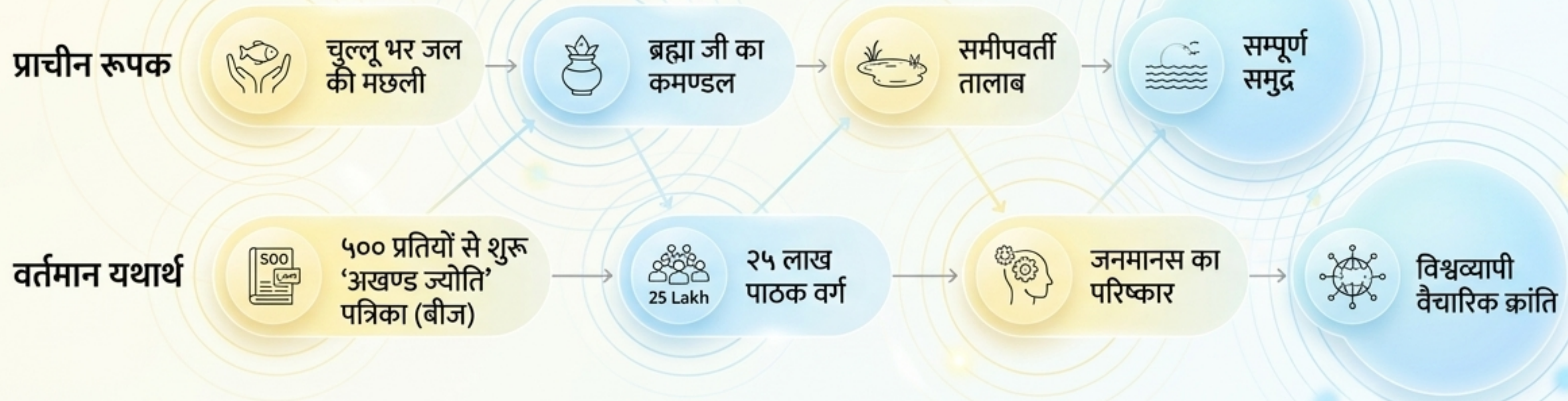
सुख-शान्ति केवल मुट्ठी भर लोगों की सज्जनता से नहीं आती; यह तब संभव है जब समाज का ‘बहुमत’ शालीनता से भरा हो। सृजन चेतना का लक्ष्य इसी उत्कृष्टता को विस्तार देना है।

लघु से महान्: विस्तार का अबाध क्रम

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए, और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वैज्ञानिक रूपक: जिस तरह 1 टी.वी. स्टेशन की तरंगें लाखों टी.वी. सेट तक पहुँचती हैं, उसी तरह एक 'सृजन-केंद्र' से निकली प्रेरणा लाखों अंतःकरणों को अनुप्राणित करती है।

विशाल लक्ष्य के लिए आवश्यक संसाधन

चुनौती

(The Challenge)

विश्व की ६०० करोड़
आबादी का वैचारिक
कायाकल्प।



वर्तमान स्थिति

(Current State)

२५ लाख नियमित
पाठक।

जलते तवे पर एक बूँद
पानी के समान।



आवश्यक लक्ष्य

(Required Scale)

१ करोड़ प्रशिक्षित
'सृजन शिल्पियों' की
सेना।



— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भयंकर अग्निकाण्ड के शमन के लिए समर्थ **फायर ब्रिगेड** चाहिए।

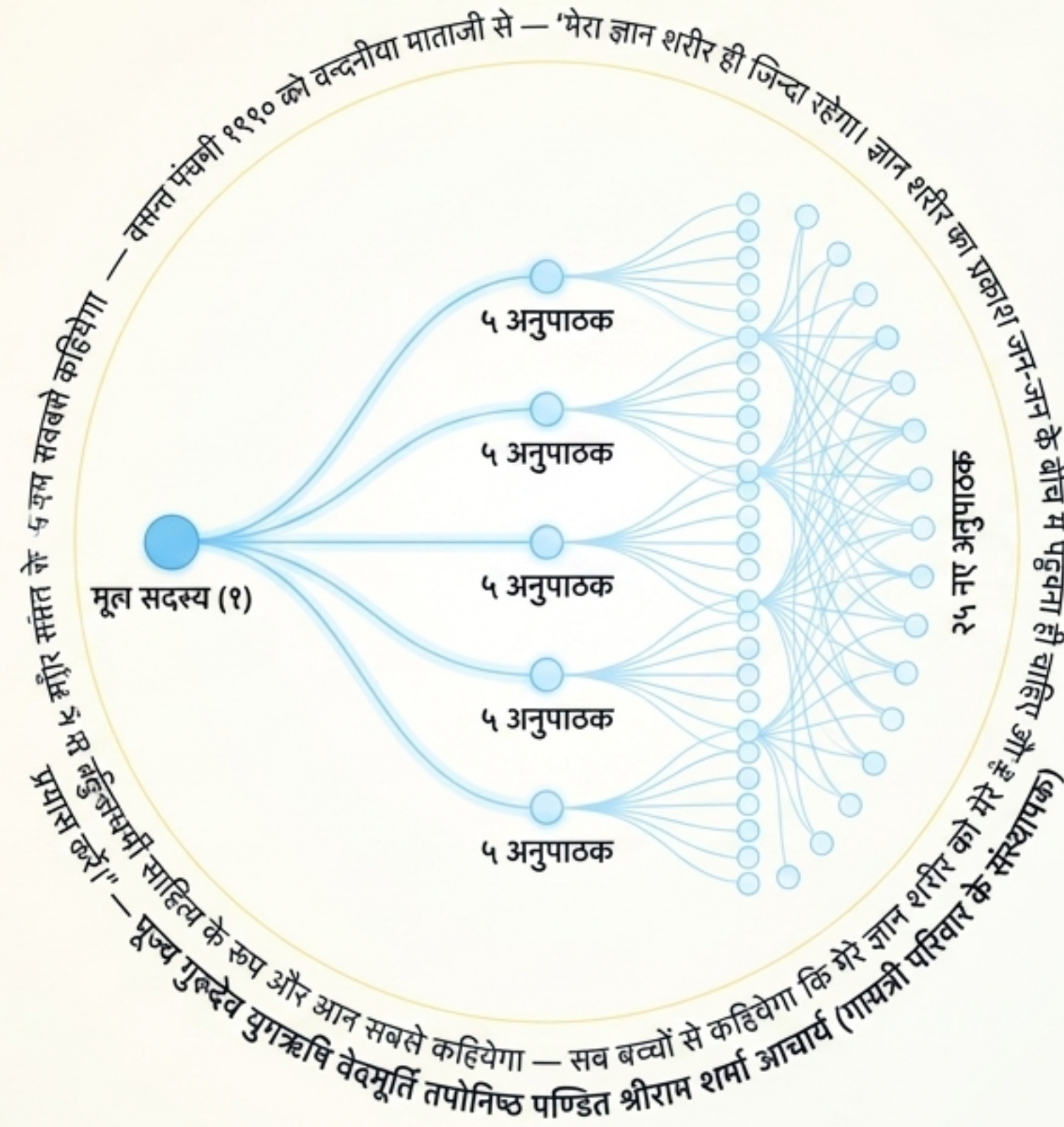
नया इंसान बनाने के लिए, दुनिया की सैन्य शक्ति के बराबर ही **'सृजन-शिल्पियों'** की आवश्यकता है।

1 से 5 और 5 से 25: गणितीय विस्तार का मॉडल

चरण १: मूल सदस्य अपनी पत्रिका
५ विचारशील लोगों को पढ़ाएं।

चरण २: ये ५ अनुपाठक पूर्ण
सदस्य बनने का संकल्प लें।

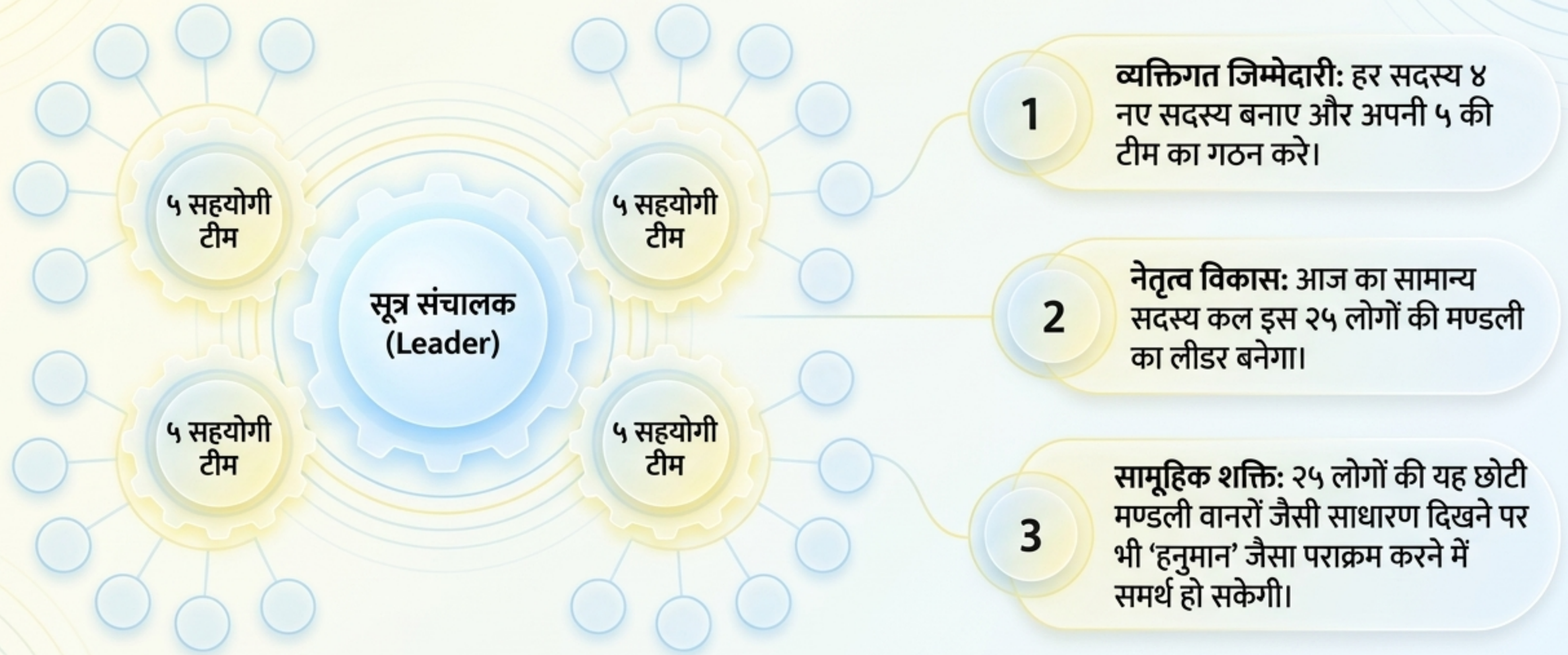
चरण ३: नए ५ सदस्य अपनी-अपनी
पत्रिका ५-५ नए लोगों तक पहुँचाएं।



Math Insight

गणित: एक ही वर्ष में २५
लोगों की मण्डली तैयार।
इस गुणन (Multiplication)
प्रक्रिया से विकास ५ गुना
अधिक तीव्र हो जाता है।

संस्थागत रूप: 'प्रज्ञा मण्डल' की स्थापना



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहिये कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अखंड ज्योति की अर्थ-व्यवस्था: शून्य व्यावसायिकता

$$\begin{array}{c} \text{[कागज की लागत]} \\ + \\ \text{[छपाई का खर्च]} \\ + \\ \text{[डाक व्यय (Postage)]} \\ = \\ \text{[पत्रिका का अंतिम मूल्य]} \end{array}$$

(ध्यान दें: इसमें किसी का पारिश्रमिक या लाभ/नफा शून्य है)

समझदारी शंका में नहीं—सहयोग में है। यदि इस तंत्र में व्यवसायिकता होती, तो पाठकों पर आदर्शवाद की कभी छाप नहीं पड़ती। गीता प्रेस की तरह यह विशुद्ध परमार्थिक उपक्रम है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

घनिष्ठता और सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन का व्यावहारिक स्वरूप

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नियमित सम्मेलन: २५ अनुपाठकों का एकत्रित होना। आतिथ्य केवल ‘सौंफ-सुपारी’ तक सीमित ताकि किसी पर आर्थिक बोझ न पड़े।



साप्ताहिक सत्संग: मिल-जुलकर ठोस कार्य करने की योजना बनाना।

जन्मदिन समारोह: छोटा दीपयज्ञ, सहगान, और एक बुराई छोड़ने व नई सत्प्रवृत्ति अपनाने का संकल्प।

नवसृजन का ईंधन: अंशदान और समयदान

अंशदान: न्यूनतम ५०
पैसे प्रतिदिन (या महीने
में १ दिन की कमाई)।

समयदान: २४ घंटों में
से न्यूनतम २ घंटे।

भाव शून्यों के लिए हड़पना
अभ्यास है, पर संवेदना जीवित है
तो इतना न्यूनतम दान किसी के
लिए भारी नहीं है।

लागत मूल्य की क्रान्तिधर्मी
पुस्तकें मंगाई जाती हैं।

समयदान का उपयोग इन पुस्तकों को घर-घर
पहुँचाने, पढ़ाने और सुनाने में किया जाता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से
— “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-
जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

क्रान्तिधर्मी साहित्य: अमृत, पारस और कल्पवृक्ष

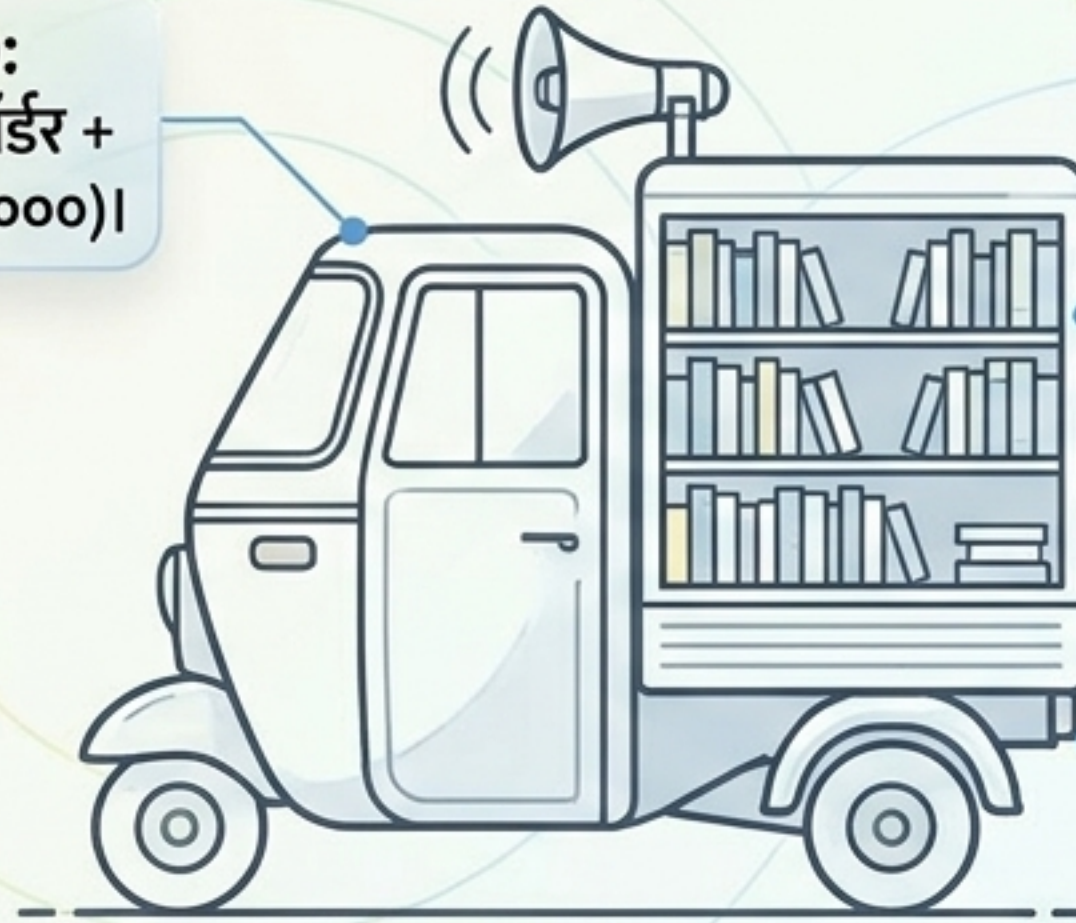


चल प्रज्ञा मन्दिर (ज्ञानरथ) — धर्म तंत्र का सशक्त माध्यम

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

हार्डवेयर (Hardware):
तिपहिया वाहन + टेप रिकॉर्डर +
लाउडस्पीकर (लागत ~₹३०००)।



सॉफ्टवेयर (Content):
₹१००० का क्रान्तिधर्मी
साहित्य।

प्रणाली (Process):
पुस्तक विक्रय पूर्णतः वर्जित।
विशुद्ध मुफ्त ‘चल-पुस्तकालय’।
पढ़िए और वापस कीजिए।

विशेषता: अचल मंदिरों की तरह न पुजारी की आवश्यकता, न निर्माण
का झंझट। इसे हाट, बाज़ार, कारखाने हर जगह पहुँचाया जा सकता है।

प्राण-चेतना प्रखर बनाए रखें: आध्यात्मिक चार्जिंग

जैसे अंगारे से राख हटानी पड़ती है, या पौधे को पानी देना पड़ता है, वैसे ही युग-सृजन के कार्यकर्ताओं को अपनी आत्मिक बैटरी चार्ज करने के लिए नियमित रूप से यह प्रशिक्षण सत्र करते रहना चाहिए।



जैसे अंगारे से राख हटानी पड़ती है, या पौधे को पानी देना पड़ता है, वैसे ही युग-सृजन के कार्यकर्ताओं को अपनी आत्मिक बैटरी चार्ज करने के लिए नियमित रूप से यह प्रशिक्षण सत्र करते रहना चाहिए।

वसन्त पंचमी १९१० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आज सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पुरुष मुल्केव
युगवर्षि वेदपुर्णि तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य